बहुत ही सहज है राजयोग...

आनंद की अनुभूति मानव की चाह है, एक खोज है, एक तलाश है और वो आनंद भौतिक सुखों में प्राप्त नहीं होता। यदि आप आनंदित होना चाहते हैं तो सबसे पहले रचनात्मकता को बढ़ाना पड़ेगा। आज मनुष्य आलसी है, आलस्य के कारण मनुष्य आनंद उन वस्तुओं में ढूंढ़ता है जो वस्तुएं निर्जीव हैं या फिर नश्वर हैं, वो अल्पकाल का, थोड़ी देर का मनोरंजन है, ना कि आनंद है। आनंद आत्मा की एक ऐसी अवस्था है जिसके बाद उसे कुछ पाने की इच्छा नहीं रहती।

पांचवे अंक में आपने देखा कि जब आत्मा आध्यात्मिक ज्ञान, पवित्रता आदि से भरपूर होती है तो उसे शांति व सुख प्राप्त होने लग जाता है और सच्ची शांति व सच्चा सुख मिलने के बाद आत्मा अपने निजी प्रेम स्वरूप को पहचानने लगती है।

आनंद

अब आत्मा प्रेम स्वरूप होती है, अर्थात् ज्ञान, पवित्रता, शांति, सुख के साथ मिलकर आत्मा अपने छठे गुण आनंद को निर्मित करती है। आत्मा का वास्तविक स्वरूप वैसे भी सत् चित् आनंद स्वरूप है। कई महान आत्माओं ने इस आनंद की प्राप्ति के लिए अपने घरबार छोड़ दिए और यहां तक कि उन्होंने अपने नाम के पीछे आनंद जोड़ दिया ताकि हर समय स्मृति रहे कि जीवन का लक्ष्य आनंद की अनुभूति करना है। आनंद अपने आप में सर्वोच्च इसलिए भी है क्योंकि आनंद जैसे गुण का कोई भी विपरीतार्थक शब्द नहीं है। जैसे सुख के साथ दुःख, प्रेम के साथ नफरत विपरीत अर्थ वाले शब्द हैं, लेकिन आनंद के साथ ऐसा कोई शब्द नहीं जुड़ता इसलिए आनंद को अलौकिक व ईश्वरीय माना गया है, तभी महान आत्माओं ने इसका अनुभव करना चाहा।

आनंद के बदले में हंसी और खुशी की तलाश में आज मनोरंजन के अनेकानेक साधन हमारे पास उप्लब्ध हैं। टी.वी., रेडियो पर बहुत सारे शो आ रहे हैं जो हमें मनोरंजन प्रदान करते हैं, हमें हंसाते हैं, लोग इसे आनंद का नाम देते हैं। जबकि ये तो टेम्प्ररी हंसी है जोकि गलत बात पर भी या द्विअर्थी (डबल मीनिंग) वाली बातों पर भी आ जाती है या यूं कहें कि दुःख में भी लोग हंसने की कोशिश करते हैं दिखाने के लिए। जबकि खुशी स्थायी है, वो किसी भी स्थिति में एकरस दिखने वाली चीज़ है। खुशी तब तक नहीं आएगी जब तक हम संतुष्ट नहीं होंगे, अपने आप को समझेंगे नहीं। आज हमारी खुशी बाहर की परिस्थितियों पर निर्भर है, बाहर सब ठीक है तो हम खुश हैं। बाहर थोड़ा भी कुछ गड़बड़ हो जाती है तो हमारी खुशी गायब हो जाती है। इसलिए अक्सर देखो माँ, बाप या फिर पती-पत्नी या और कोई भी आपस में यही बात करते हैं कि आप खुश हैं तो मैं भी खुश हूँ, इसका मतलब हमारी खुशी दूसरों पर निर्भर है। हमारी खुशी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थों पर निर्भर नहीं है, यह तो हमारी निजी सम्पत्ति है जो सच्चे ज्ञान के आधार से ही प्राप्त हो सकती है, क्योंकि जिस आधार से खुशी आज है वो विनाशी है। तो जैसे ही हम सच्चे रूप से खुश रहना शुरु हो जाते हैं तो वो हमारे आनंद की अवस्था मानी जाती है और आनंदित व्यक्ति कभी भी किसी बात की शिकायत नहीं करता। वो हमेशा आनंदित रहता है।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-6

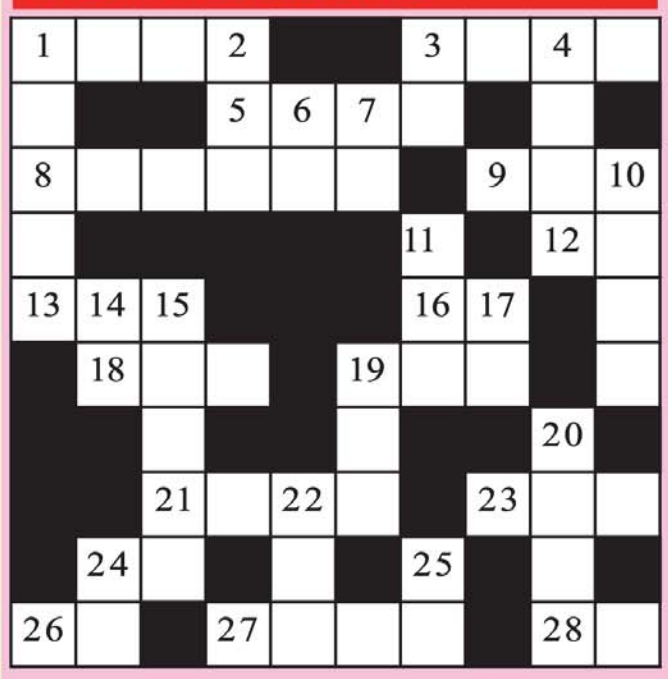

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. भाग्य का निर्माता, ब्रह्मा (2-3)
2. तुम बच्चों को योग में कभी.... नहीं है (3)
3. बाण, तालाब, सिर (2)
4. पतिंगा, शलभ (4)
6. आत्मा के निकलने के बाद शरीर को कहा जाने वाला शब्द, मुर्दा (2)
7. काग, कौआ, पक्षी (2)
10. बड़े नाम वाला, नामवर, प्रसिद्ध (4)
11. .... बच्चे बाप का नाम बाला करेंगे, लायक पुत्र (3)
14. बहादुर, शूर,शक्तिशाली (2)
15. माया बड़ी...है इससे सावधान रहो, शक्तिशाली (5)
17. रास्ता, पथ (2)
19. सम्पूर्ण, सारा (3)
20. मनोहर, सुन्दर, लुभायमान (4)
22. .... पुष्प समान पवित्र बनना है (3)
24. राय, विचार, सहमति (2)
25. जल, पानी (2)

बायें से दायें

1. गंगा को धरा पर लाने वाला, ब्रह्मा (4)
3. नज़दीकता, पास रहना (4)
5. एक्टर, हुनरबाज (4)
8. गणेश, विघ्न को नष्ट करने वाला (2-4)
9. भेजा गया, प्रस्थान कराना (3)
12. प्रसिद्धि, धाक, व्यक्ति/प्राणी का बोध सूचक शब्द (2)
13. गण्डक, कागज आदि पर अंकित मंत्र (3)
16. सम्पूर्ण, सारा (2)
18. देह अभिमान रूपी.... को हटाने से ही बाप से करेन्ट मिल सकती है (3)
19. स्तर, तल (3)
21. अग्नि शमन वाहन (4)
23. विचरण, घूमना-फिरना (3)
24. मग्न, लीन, खो जाना, नशे में चूर (2)
26. निशा,....जल्दी सोकर अमृतवेले 2 बजे से योग करो (2)
27. चुनौती (4)
28. सूर्य पुत्र, कुन्ती का बड़ा बेटा (2)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन

भिवानी-हरियाणा। ज्ञानचर्चा के पश्चात् हरियाणा के पूर्व मंत्री छत्रपाल सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रजनी।

गुवाहाटी-रूपनगर। आध्यात्मिक कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए विनोद कुमार पिपरसेनिया,आई.ए.एस.,चीफ सेक्रेट्री। साथ है श्रीमती पिपरसेनिया व ब्र.कु. शीला।

जैतारण-राज.। 'राजयोग' विषय पर चर्चा करने के बाद एस.डी.एम. घनश्याम शर्मा को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. छाया। साथ हैं ब्र.कु. लता।

शामली। स्नेह मिलन कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में पंजाब नेशनल बैंक के मैनेजर दिनेश भाई, ब्र.कु. राज बहन, ब्र.कु. सुरभि व बैंक स्टाफ।

तपा-पंजाब। आध्यात्मिक प्रदर्शनी समझाने के पश्चात् एस.एच.ओ. संजीव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ऊषा। साथ हैं डॉ. एल.आर. शर्मा।

नरकटियागंज-विहार। रेलवे स्टेशन पर लगाई गई आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए अशोक कुमार,स्वास्थ्य निरीक्षक,पूर्व मध्य रेलवे, चर्च के फादर पीयूष जी, लाल बाबू राऊत,अधीक्षक,पूर्व मध्य रेलवे, ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. अबिता व अन्य।